विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

रूपम कुमारी ,वर्ग -सप्तम्, विषय -हिंदी

दिनांक 8-9- 2020

based on NCERT pattern

|| ***अध्ययन -सामग्री ||***

सुप्रभात बच्चों ,

पिछली कक्षा में आपने पाठ 8 के कठिन शब्दों को जाना तथा कवि परिचय से अवगत हुए । आज की कक्षा में वृंद के दोहे का भावार्थ आप को समझाने जा रही हूं .....

भावार्थ -

जो जाको गुन जानही,सो तिहि आदर देत ।
कोकिल अंबहि लेत है ,काग निबौरी हेतु ।।

अर्थ- इन पंक्तियों के द्वारा कवि कह रहे हैं कि जो व्यक्ति जिसके गुण जानता है ,वह उसे आदर देता है । संसार में विवेकशील प्राणी होता वह दूसरों की प्रतिभा को सम्मान देता है सही उपयोग करता है ।

जैसे कोयल आम के स्वाद को जानता है तो, उसके मिठास का आनंद ले सकता है तथा उसकी खूब जानता वह यह समझता है कि आप सारे फलों में श्रेष्ठ लेकिन हुआ बुद्धिमान पहचान नहीं करता उसे वस्तुओं की परख नहीं होती तो वह निबोरी खाकर ही संतोष करता वह उसी के स्वाद को जानता है ।।

दोहा -

सबै सहायक सबल को , कोउ न निबल सहाय । पवन जगावत आग कौं, दीपहिं ही देत बुझाय ।।

अर्थ- कवि कहते हैं कि, दुनिया का एक कठोर नियम है - सभी उसी की सहायता करते हैं, उसी का साथ देते हैं जिनके पास धन, वैभव, यश हो ।अर्थात, सभी शक्तिशाली लोगों की ही मदद करना चाहते हैं और निर्बल यानी कमजोर की सहायता कोई नहीं करता ।कोई उन लोगों की मदद नहीं करता जो शक्तिहीन, अर्थहीन होते हैं जो शक्तिहीन होते हैं। क्योंकि उनसे किसी प्रकार की मदद की उम्मीद या स्वार्थ पूर्ति के सामने वाले को नहीं होती है। उदाहरण स्वरूप हवा आग की लपट को बढ़ा देती है, लेकिन एक छोटे से दीपक को तुरंत बुझा देती है।

अपनी पहुंच विचार कै ,करतब करिए दौर।
तेते पांव पसारिए, जेती लंबी सौर ।।

अर्थ- इन पंक्तियों में कवि कहते हैं कि आपको हर कार्य अपनी क्षमता के अनुसार करनी चाहिए। आपका जितना सामर्थ्य है ,जितनी आप में जितना आपमें जितनी प्रतिभा है उसके अनुरूप ही आप अपने कार्य को करें। इस बात को आप इस उदाहरण से समझिए हमारा चाहे कितना भी लंबा पैर क्यों ना हो ,लेकिन जितनी बड़ी चादर होती है हमें पैर को सिकुड़ कर उसी में ढ़क लेना होता है, नहीं तो ठंड लगती ही रहती है। ठीक उसी प्रकार जितना सामर्थ है, जितनी क्षमता है उतना ही काम करना चाहिए अन्यथा सब कुछ गलत हो जाता है। निर्देश -दी गई सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें और समझने का प्रयास करें।

निबोरी का अर्थ होता है नीम का कड़वा फल